पुराणों में श्री चित्रगुप्त

चित्रगुप्तत्व

हमारे पुराणों में कल्पभेद से भगवान् चित्रगुप्त के दिव्य जन्म, कर्म, और वृतान्त का वर्णन मिलता है । तत्व की दृष्टि से उनका स्वरूप एक है, उनके लीलाचरित के अनेक रूप मिलते हैं । जिनकी बुद्धि जिस सीमा तक उनके रूप को समझने में सफल हो सकी, वे उस (सीमा) में उनका चिन्तन कर सकें । चित्रगुप्तत्व परम निगूढ़ है, यह भगवतत्व है । चित्रगुप्त कहीं सत्स्वरूप अकाल परमेश्वर और काल के नियन्ता हैं, कहीं वे सृष्टि, स्थिति, और संहार करने वाले हैं, पर वे निर्विकार, अनिर्वचनीय परमात्मा ही हैं । उनके सभी नाम, रूप, लीलाचरित और धाम वन्दनीय और सत्य हैं । वे नित्य, सनातन, सच्चिदानन्दस्वरूप हैं, वेन्यासब्रह्म हैं, वे न्यायपुरूषोत्तम हैं । वे प्राणियों के द्वारा किये गये शुभ–अशुभ, आचार–विचार, पुण्य और पाप के निष्पक्ष विचारक हैं । वे पुण्य और पापकर्म करने वालों के फल परिणाम अथवा विपाक के व्यवस्थापक हैं । उनके न्याय की सहज और स्वाभाविक विशेषता यह है कि उनके द्वारा सत्प्रेरित होकर पापी पाप का फल भोग कर कर्मबन्धन से छुटकारा पाता है और पुण्यात्मा अपने पुण्य के बल से मोक्ष में स्थित हो जाता है । चित्रगुप्त की न्यायकारित्ता से जीवात्मा सत्स्वरूप में स्वस्थ हो जाता है । वे समस्त लोकों के हितचिन्तक हैं, सबका कल्याण करते रहते हैं, सबके साथ एकसमान निष्पक्ष व्यवहार करते हैं । वराहपुराण–

चित्रगुप्तो महाबाहुः सर्वलोकार्थचिन्तकः ।
समः सर्वेषु भूतेषु .... ।।

(वराहपुराण 201 ।8)

भावार्थ – वे प्राणिमात्र के हृदय में स्थित होकर लोगों को न्यायमुक्त शुभ कर्म करने की प्रेरणा देते हैं, यही परमात्मा चित्रगुप्त का कायस्थ रूप है । वे अन्तरात्मा हैं, अन्तर्यामी हैं । "कायस्थ" शब्द का आशय है –

"कायस्थः कायेषु सर्वभूतशरीरेषु अन्तर्यामितया तिष्ठति ।"

चित्रगुप्त कायस्थ हैं, साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर हैं।

चित्रगुप्त की अभिव्यक्ति

पुराणों में चित्रगुप्त के प्रकट होने अथवा अवतार लेने के सम्बन्ध में अनेक कथायें मिलती हैं, उनके अनेक पुराणों में श्री चित्रगुप्त नाम मिलते हैं, उनके विविध चरित मिलते हैं । इन कथाओं और लीलाचरित का मात्र आशय यह है कि वे पाप–पुण्य का फल भोगने वाले जीवात्मा को सद्गति प्रदान कर सत्स्वरूप में प्रतिष्ठित कर देते हैं । वे सृष्टि के संचालक, नियामक और न्यायव्यवस्थापक हैं।

पद्मपुराण में श्री चित्रगुप्त

ब्रह्मा का तप, चित्रगुप्त का प्राकट्य हस्तलिखित पद्मपुराण में भगवान चित्रगुप्त के प्राकट्य और दिव्य कर्म–वृतान्त का विशद तथा महत्वपूर्ण वर्णन उपलब्ध होता है। पद्मपुराण में मिलता है हस्तलिखित मुद्रित प्रति में तो उनके चरित्र सम्बन्ध में कहीं–कहीं उल्लेख मात्र मिल जाता है । पद्मपुराण के पातालखण्ड के दो अध्यायों की एक हस्तलिखित प्रति में ब्रह्मा की तपस्या और चित्रगुप्तों के प्राकट्य पर प्रकाश डाला गया है। इस हस्तलिखित अंश की प्रतिलिपि सम्वत् 1925 वि. में की गयी थी । पुस्तक का नाम है "चित्रगुप्त कथा"। पुष्पिका में "इति पद्मपुराणे पातालखण्डे कायस्थोत्पत्तिसारो द्वारकथनम्" अंकित है । इसके पहले अध्याय में वर्णन है कि जब समस्त सृष्टि उत्पन्न हो गयी तब धर्मराज ने ब्रह्मा से कहा कि मैं इतनी बड़ी सृष्टि को सँभाल नहीं सकता । ब्रह्माजी ने धर्मराज को आश्वासन दिया कि हे पुरूष श्रेष्ठ! आप अपने स्थान पर जाइये। आपको इस कार्य में सहायता देने के लिये पुरूष मिलेंगे । धर्मराज के जाने पर ब्रह्माजी चिंतितहोकर समाधिस्थ हो गये । वे ग्यारह हजार वर्ष तक तप में तत्पर रहे। उनके शरीर से कमल के समान नेत्रवाले, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाले, विशालबाहु पुरूष का प्राकट्य हुआ। उनके शरीर श्याम वर्ण का था, ग्रीवा शंख के समान थी, वे समस्त लोक का हित करने वाले थे, उनके शरीर पर उत्तरीय शोभित था, वे धर्मात्मा थे, उनकेहाथ में लेखनी और दावात थी । वे ब्रह्मा के सम्मुख प्रकट हो गये।

तच्छरीरान्महाबाहु : श्यामः कमललोचनः ।
कम्बुग्रीवोगूढ़शिराः पू र्णचन्द्रनिभाननः ।।
सउत्तरीयो धर्मात्मा लोकानां हितकारकः ।
लेखनीपट्टिकाहस्तः मसीभाजनंयुतः ।।

वे अव्यक्त जन्म वाले ब्रह्मा के सामने स्थित हो गय। ब्रह्म ने पूछा कि हे देव! आप कौन हैं, इस तरह क्यों स्थित हैं । पुरूष ने ब्रह्मा से कहा कि मैं आपकी समाधि से प्रकट होकर आपके सामने स्थित हूँ । आप मेरा नाम बताइये और कहिये कि किम

Scanned with CamScanner

कार्य में मुझे अपनी शक्ति का सदुपयोग करना है।

समाधेस्तव उत्पन्नः कायतश्चविनिर्गतः।
नाम देहि महाराज! अधिकारं च में पुनः ।।

चित्रगुप्त की तपस्या और शक्ति आराधना

ब्रह्मा की इच्छा से चित्रगुप्त ने उज्जयिनी के निकट एक सघन वन में जाकर तप किया। उन्होंनें भगवती चण्डिका की उपासना की। उन्होंने महामाया को अपने तप से प्रसन्न कर लिया। शिवप्रिया भगवती कालिका ने प्रत्यक्ष दर्शन दिया। चित्रगुप्त ने उनकी बड़ी भव्य स्तुति की।

मातस्त्वं परमा शक्तिर्म हामाये महेश्वरी।
मोहिनी मोहिता मोहा महामोहविनाशिनी।।
अव्यक्ता अव्यया अम्बा अङ्दा अङ्दारिणी।
अङ्गेशी अन्नदाअम्बा अघघ्नी अमया परा ।।
आदिभूता ह्यना दिस्त्वं असम्बन्धस्वरूपिणी।
आश्रया अपराशृङ्गा च सरिताम्बरा ।।
अजया ह्यर्थरूपा च शैलेशी परमेश्वरी।
अजेकपादाहिर्बुध्न्या अजाङ्गी अमरेश्वरी ।।
शृङ्गनागाङ्गनागङ्गा गङ्गा त्रिजगताम्बरा।
गङ्गाधराङ्ग विचरा ललिता गरूड़ ध्वजा ।।
सिंहासना सिंहध्वजा सिंहेशी सिंहसूनुजा।
सिंहोदरी सहस्त्राक्षी सहस्त्रासुरसन्दरी ।।
ह्रीं कारी च महा विद्या कालिका कमलात्मिका ।।
कुलेशी कुलमाता च कुलवृद्धिः कुलात्मिका ।।
कुलारिघ्नी कुमारी च कुलजा कुलरूपिणी।
कुमारीघ्नी कुलाचारी कामिनी कामना मता ।।
कामेशी कामपत्नी च कामदा कमले क्षण।
कमला कमलामोदा कमलेशी कञ्जागता ।।
कञ्जाकरा च कमनीयापद्मिनी पद्मजापरा।
पद्माक्षी पद्ममाला च वासना पद्मसम्भवा ।।
प्रांण पद्मावरा निष्ठामीषण भयनाशिनी।
एतै र्नामपदैर्दिव्यैस्तुता में फलदायिनी ।।
वाञ्छितं दहि मे मातः कालिके जगदम्बिके ।

हे माता ! आप परम शक्ति (परमेश्वरी) महामाया, महेश्वरी, मोहिनी, मोहिता, मोहस्वरूपिणी और महामोह (अविद्या) को नाश करने वाली – महामोहविनाशिनी हैं। आप अव्यक्त हैं, आप अव्यय–शाश्वत सनातन हैं, अम्बा हैं, अंगदा (सृष्टि करने वाली जननी) हैं, आप अंदारिणी (संहारकारिणी) हैं, आप अंगेशी (प्रकृति की स्वामिनी) है, आप अन्नदा (अन्नपूर्णा) हैं, जग जननी हैं, पापों का नाश करने वाली – अघघ्नी हैं, आप अमयां – सर्वतन्त्रवतंत्र, निर्भय परमेश्वरी पराशक्ति हैं। आप सबसे पहले अभिव्यक्ति होने वाली महाशक्ति आदिभूता हैं, आप अनादि हैं, आप असम्बन्धस्वरूपिणी–सर्वमयी एकमात्र सत्ता हैं, आप आश्रया –सर्वाधारस्वरूपिणी निजाशक्ति परमेश्वरी हैं। आप अपराशृंगा–पराशक्ति सर्वेश्वरी हैं। आप समस्त नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी की तरह प्रभावशालिनी–सरिताम्बरा, शृंगा (सर्वोच्च) हैं। आप अजया हैं, अर्थरूपा–सिद्धेश्वरी हैं, शैलेशी–हिमालयनन्दिनी, माता पार्वती हैं। आप परमेश्वरी हैं, अजै कापाद–सनातनी शक्ति (शिवानी, भवानी) हैं, आप साक्षात् अहिर्बुध्न्या (शिवस्वरूपिणी) हैं, अजांगी (शिव की अर्धांगिनी अथवा स्वसंवेद्य परमेश्वरी) हैं, अमरेश्वरी–देवताओं द्वारा पूज्यस्वामिनी–महेश्वरी हैं। आप शृंगनागांगना गंगा (हिमालय के सर्वोच्च शिखर से प्रवाहित साक्षात् गंगारूपिणी) है। आप गंगा हैं, आप त्रिजगताम्बरा – तीनों लोकों की स्वामिनी हैं, गंगाधरांगविचरा – शिव की कान्ता–शिवविलासिनी हैं, आप साक्षात ललितादेवी हैं, आप गरूड़ध्वजा–वैष्णवी महाशक्ति महालक्ष्मी नारायणी हैं। आप सिंहासना–सिंहवाहिनी दुर्गा हैं, आप सिंहध्वजा हैं, सिंहेशी–सिंह की नियन्त्रिका स्वामिनी हैं। आप सिंहसूनुजा–गणेश की माता हैं, आप सिंहोदरी हैं, सहस्त्राक्षी हैं और सहस्त्रासुरसुन्दरी–असंख्य असुरों को अपनी माया से मोहित करने वाली हैं। आप ह्रींकारी–ह्रींबीजस्वरूपिणी महादेवी हैं, महाविद्या (दस महाविद्यास्वरूपा) हैं, आप कालिका हैं, आम कमलात्मिका–महालक्ष्मी हैं। आप कुलेशी (शिव के साथ विहार करने वाली कुलकुण्डलिनी महाशक्ति, कुलमाता–पार्वती) हैं। आप कुलवृद्धि–शिव की परम शक्ति हैं, आप कुलात्मिका–शिव की आत्मरमणेश्वरी हैं। आप कुलारिघ्नी (असुरों का नाश करने वाली जगदम्बा) हैं, आप कुमारी (स्वशक्तिरूपिणी अव्यय सनातनी शक्ति) हैं, आप कुलजा (शिव को प्रसन्न करने वाली महेश्वरी कुलकुण्डलिनी महाशक्ति) हैं, आप कुलरूपिणी साक्षात् शिवस्वरूपिणी पराम्बा हैं। आप कुमारीघ्नी–रक्षा करने वाली महामाया हैं। आप कुलाचारी कामिनी – शिवकान्ता हैं, आप साक्षात् कामना–संकल्पस्वरूपिणी हैं, आप परम पूज्य हैं। आप कामेश्वरी हैं साक्षात शिवपत्नी हैं, समस्त कामनाओं की सिद्धि–कामदा हैं। आप कमलेक्षणा (कमल के समान कोमल करूणामय नेत्रों से समलुकृत) हैं, आप लक्ष्मी को अपने दर्शन से प्रसन्न करने वाली परमेश्वरी–कमलामोदो हैं, आप कमला की ईश्वरी कमलेशी हैं, आप कमलवासिनी लक्ष्मी–कञ्जागता हैं। आप कञ्जाकारा–कमल के समान कोमल आकृति वाली हैं,

Scanned with CamScanner

आप कमनीय हैं, आप पद्मिनी हैं, आप पद्मजा हैं, परा परमेश्वरी हैं। आप पद्माक्षी, पद्ममाला, पद्मसम्भवा हैं,वासना–कामस्वरूपिणी परम पूज्या, निष्ठा–रूपिणी और भीषण आकृति वाली हैं, आप भयनाशिनी हैं । इन नामों और पदों से मैंने आपकी स्तुति की है, आप फलदायिनी हैं । हे कालिके, हे जगदम्बे! आप मेरा मनोरथ पूरा कीजिए। जगदम्बा वरदान देकर अन्तर्धान हो गयीं । यह शक्तिस्तोत्र हस्तलिखित पद्मपुराण के पातालखण्ड के चित्रगुप्त कथा के पहले अध्याय के 55 से 66वें श्लोक में वर्णित हैं।

ब्रह्मा का उज्जयिनी–गमन, चित्रगुप्त दर्शन

ब्रह्मा ने चित्रगुप्त का उज्जयिनी जाकर दर्शन किया । उन्होंने भगवान चित्रगुप्त से निवेदन किया कि "हे देव, चित्रगुप्त ! विशालबाहो परमेश्वर! आप ने मेरी तपस्या से अन्तरात्मा रूप में दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया , मैं धन्य हो गया । आप ने मेरी काया समस्त सृष्टि से कायस्थ रूप में अभिव्यक्त होकर मुझे अपनी महिमा से अवगत करा दिया । आप मेरे प्रिय हैं, लोक में कायस्थरूप में पूज्य होंगें । धर्मराज की संयमिनीपुरी में देवकार्य सम्पादित कीजिये । आप प्राणीमात्र के पुण्य–पाप के लेखक द्रष्टा हैं, न्यायाधीश हैं।

चित्रगुप्त महाबाहो मत्प्रियो मत्समुद्भवः ।।
मम कायात्समद्भूतं सर्वाङं प्राप्य सत्वरम्।
तस्मात् कायस्थ विख्यातो लोके त्वंतु भविष्यति ।।
धर्मराजपुरंगच्छ देवकार्य कुरू सदा।
सदसत्सर्वजन्तूनां लेखकः सर्वदैव हि।

(हस्तलिखित पद्मपुराण पातालखण्ड अ.2)

श्री चित्रगुप्त ब्रह्मा की आज्ञा से देवकार्य के सम्पादन के लिये धर्मपुरी में चले गये।

अघश्चोर्ध्वं निरीक्ष्याथ पुरूषं चाग्रतः स्थितम्।
पप्रच्छ को भवानग्रेस्थितोऽस्ति पुरुर्षम ।।

उन पुरूष ने जब अपना नाम पूछा तो ब्रह्मा ने कहा कि आप मेरी काया में स्थित रहने के नाते कायस्थ कहलायेंगे, आप चित्रगुप्त के नाम से विख्यात होंगे। ब्रह्मा की उक्ति है ।

पुण्यस्थितिं समाधाय मत्काये त्वं यतः स्थितः ।
लोकेऽस्मिन्भाविताजा त्यातस्मात्कायस्थसं ज्ञकः ।।
चित्रगुप्तेनि नाम्ना च भुवि ख्यातो भविष्यसि।
धर्मा धर्म विवेकार्थं धर्मराजपुरे सदा।

पद्मपुराण 55000 श्लोक वाला सबसे वृहद् प्रामाणिक तथा आदिपुराण है। इस श्लोक के अनुसार धर्मराज, यमराज और चित्रगुप्त एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वरीयसत्ता के विभिन्न नाम हैं । असंख्य मानवों के पाप पुण्य का लेखा रखने वाले वे चित्रगुप्त हैं । पापियों को दण्ड देने वाले वे यमराज हैं और पुण्यात्माओं को पुरस्कृत करने वाले धर्मराज हैं। धर्म–अधर्म का विवेचन ही धर्मराज की पुरी में चित्रगुप्त का प्रमुख कार्य है । हस्तलिखित पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड में उल्लिखित बताया जाता है कि ब्रह्मा के शरीर से उद्भूत होने के नाते चित्रगुप्त कायस्थ कहे जाते हैं, उनके वंशज अनेक गोत्रोत्पन्न कायस्थ पृथ्वी पर विराजमान हैं।

चित्रगुप्त इति ख्यातो धर्मराजसमीपतः।
प्राणिनां सदस्तकर्म लेख्याय स निरूपितः ।।
ब्रह्मकायोद्भवो यस्मात् कायस्थो वर्ण उच्यते ।
नानागोत्राश्चतदवंशयाः कायस्थाः भुवि सन्ति वै ।।

(पद्मपुराण सृष्टिखण्ड)

भगवान चित्रगुप्त प्राणियों के सदस्त्कर्म का विवेचन कर निष्पक्ष न्याय का विधान करते हैं, प्राणिमात्र का पुण्य संवर्धन ही उनका उद्देश्य है ।

सूत–शौनक–संवाद, चित्र–विचित्र–कथा (कायस्थ)

पद्मपुराण के पाताल खण्ड में सूत–शौनक सम्वाद है । सूत ने शौनक से कहा कि मैं कायस्थ–स्थिति और लक्षण वाली पद्मपुराण संहिता सुनना चाहता हूँ । कायस्थ के वर्ण, कुलाचार और गौत्र का निरूपण कीजिए । सूत ने कहा कि यह अद्भुत आख्यान है । चित्र और विचित्र नाम वाले धर्मराज के दो सचिव हुए । ब्रह्मा ने धर्मराज को उन दोनों को प्रदान किया । ये दोनों दण्डनीति के नायक और राजनीति में विलक्षण थे । शान्तिकर्म में (सत्यवादी) यथार्थवादी थे। ये कायस्थ नाम से प्रख्यात थे, कायस्थ के पूर्वज थे । लेखनज्ञान में कार्यरत रहते थे । ब्रह्मा ने उनसे कहा कि आप दोनों क्षत्रिय वर्ण में स्थित हैं।

"भवन्तौ क्षत्रवर्णस्थौ ....।"

इस तरह कायस्थ के वर्ण का संकेत कर ब्रह्मा अन्तर्धान हो गये । सूत ने कहा कि दोनों, चित्र और विचित्र कर्मयोगी कायस्थ हैं, वे भगवान विष्णु के प्रिय हैं।

"कायस्थसंज्ञया चित्रविचित्रौ विष्णुवल्लभौ ।"

मुद्रित पद्मपुराण का एक विशिष्ट श्लोक

मुनि भृगश्रृङ द्वारा यम–स्तवन

पद्मपुराण के उत्तर खण्ड के (आनन्द आश्रम, पूना द्वारा मुद्रित) 225वें और 226वें अध्याय में मुनि मृगश्रृङ का आख्यान मिलता है । मुनि मृगश्रृङ का आख्यान मिलता है। मुनि मृगश्रृङ ने यमराज की जो स्तुति कीहै, उससे स्पष्टहो जाता है कि यमराज

CS Scanned with CamScanner

के चौदह नामों में "चित्रगुप्त" यम का ही एक नाम है। मुनि मृगशृङ्ग ने स्तुति की है –

ॐ यमाय धर्मराजाय मृत्युवे आन्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वभूक्षयाय च ।।
औदुम्बराय दघ्नाय नीलाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः ।।

(पद्मपुराण उत्तर, 225 |1–2)

अर्थात् (1) यमाय–शासनकर्त्ता (2) धर्मराजाय– न्यायकर्त्ता (3) मृत्युदेव – प्राणहर्ता (4) अन्तकाय–प्राणहर्ता (5) वैवस्वताय – सर्वश्रेष्ठ शासनकर्त्ता (6) कालाय – कालब्रह्म (काल भगवान) (7) सर्वभूत क्षयाय – सब भूतों को नष्ट करने वाले (8) औदुम्बराय–ज्योति स्वरूप (9) दहनाय–भस्म करने वाले (10) नीलाय – नीले वर्ण (रंग) के (11) परमेष्ठिने – सृष्टिकर्ता (12) वृकोदराय – ब्रह्माण्ड के समस्त प्राणियों को अपने उदर में समेटने वाले (13) चित्राय – समस्त प्राणियों के कर्मों को चित्रित करने वाले (14) चित्रगुप्ताय – ब्रह्माण्ड के समस्त प्राणियों के हृदय में वास करते हुए उनके शुभाशुभ कर्मों का निरीक्षण कर न्याय करने वाले चित्रगुप्त जी।

भावार्थ – ऊँयम, धर्मराज, मृत्यु , अन्तक, वैवस्वत, काल, सर्वभूतक्षय औदुम्बर, दघ्नलील, परमेष्टी, वृकोद, चित्र, चित्रगुप्त इन चौदह नाम से पुकारे जाने वाले भगवान यमराज को नमस्कार है। (पद्मपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर – पृष्ठ 893)

स्कन्दपुराण में चित्रगुप्त, उनकी सूर्य-उपासना

स्कन्दपुराण के प्रभास खण्ड में चित्रगुप्त के चरित्र का सबसे अलग एक विलक्षण वर्णन मिलता है । उन्हें सूर्य का उपासक कहा गया है । उन्होंने सूर्य से सर्वज्ञ होने का वरदान प्राप्त किया था । उन्हें यमराज ने अपनी पुरी में समस्त प्राणियों के चरित्र–कर्म के लेखक अथवा विचारक पद पर अभिषिक्त किया था। स्कन्दपुराण के प्रभास–खण्ड में महादेव–पार्वती के संवाद में वर्णन है, पार्वती ने कहा उस स्थान के दक्षिण भाग में ब्रह्मकुण्ड के समीप दरिद्रतानाशक चित्रादित्य विराजमान हैं। प्राचीन काल में इस पृथ्वी पर मित्र नाम के एक धर्मात्मा कायस्थ निवास करते थे। वे सदा सब प्राणियों के हित में तत्पर रहते थे। उनके चित्र नाम पुत्र और चित्रा नामक कन्या थी।

मित्रो नाम पुरा देवि धर्मात्माऽभूत् धरातले ।
कायस्थः सर्वभूतानां नित्यं भूतिहिते रतः ।।
तस्याः तथाद्वयं यज्ञ ऋतृकालाभिगामिनः।
पुत्रः परमतेजस्वी चित्रो नाम वरानने ।।
तथा चित्राऽभवत्कन्या रूपाढ्या शीलमण्डना ।।

(स्कन्दपुराण प्रभास 139/2–4)

इन दोनों सन्तानों के जन्म लेते ही उनके पिता धर्मात्मा मित्र की मृत्यु हो गयी । मित्र की पत्नी, पति के साथ चिता में प्रवेश कर सती हो गयी । इन दोनों अनाथ सन्तान का ऋषियों ने पालन किया । वे वन में ही रहकर बचपन से ही व्रतपारायण बन गये । एक बार उन दोनों ने प्रभास क्षेत्र में आकर परम देव भगवान् सूर्य की स्थापना की । दोनों तपस्या में तत्पर हो गये। धर्मात्मा चित्र ने धूप, माला और चन्दन आदि उपचारों से सूर्य देव का पूजन किया और वशिष्ठ जी द्वारा बताये गये अड़सठ नामों से उनका स्तवन किया।

अथ तौ बालकौदीनावृषिभिः परिपालितौ।
वृद्धिं गतौ महारण्ये बालावेब स्थिते व्रते ।।
प्रभासं क्षेत्रमासाद्य तपः परममास्थितौ।
प्रतिष्ठाप्य महादेवं भास्कर वारितस्करम् ।।
पूजयामासधर्मात्मा धूपमाल्यानुले पनै :।
वसिष्ठकथिचैश्चैव ह्यष्टषष्टिसमन्वितैः ।।
नामभिः सूर्यदेवशं तुष्ठाव प्रञ्लि : प्रभुम्।

(स्क.पु . प्रभास 139 |6–8)

चित्रगुप्त ने कहा कि जो आदिदेव जगन्नाथ पापनाशक तथा रोग निवारण करने वाले हैं, उन आकाश के स्वामी भास्कर को मैं सिर से प्रणाम कर उनकी स्तुति करता हूँ। उनके सहस्त्रों नेत्र, सहस्त्रों रश्मियाँ तथा सहस्त्रों किरणमय श्रायुध हैं । उनके गुह्य नामों द्वारा उनका स्तवन किया जाता है । उन प्रातःकाल गंगासागर संग पर निवास करने वाले मुण्डीर स्वामी को मैं नमस्कार करता हूँ । मध्यान्ह काल में यमुना तटवर्ती भगवान कालप्रिय को और सूर्यास्त के समय चन्द्रभागा नदी के तट पर विराजमान श्रीमूल स्थान को मैं प्रणाम करता हूँ, जहाँ उपवास करके श्री साम्बजी को स्वतः सिद्धि प्राप्त हुई है ।

प्रणम्य शिरसा देवं भस्करं गगनाधिपम्।
आदिदेवं जगन्नाथं प्रापघ्नं रोगनाशनम् ।।
सहस्त्राक्षं सहस्त्रांशुं सहस्त्रकिरणद्युतिम्।
तमहं संस्तवयिष्यामि संपृक्तं गुह्यनामभिः ।।
मुण्डीरस्वामिनं प्रातर्गङ्गासागरसङ्ग मे।
कालप्रियं तु मध्याह्ने यमुनातीरमाश्रितम् ।।
मूलस्थानं चास्तमने चन्द्रभागातटे स्थितम्।
यत्र साम्बः स्वयं सिद्ध उपवासपरायणः ।।

(स्क.पु .प्रभास 139 |9–12)

CS Scanned with CamScanner

काशी में लोहिताक्ष, गोभिलाक्ष में बृहन्मुख, प्रयाग में प्रतिष्ठान, महाद्युति में वृद्धादित्य, कोट्यक्ष में द्वादशादित्य, चतु र्घट में गङादित्य, नैमिषाण्य में गोलस्थ, भद्रपुर में, भद्र, जया में विजयादित्य, प्रभास में स्वर्णवेतस, कुरूक्षेत्र में सामन्त, इलावृत में त्रिमन्त्र, महेन्द्र में क्रमणादित्य, हिरण्य में सिद्धेश्वर, कौशाम्बी में पद्मबोध, ब्रह्मबाहु में दिनकर, केदार में चण्डकान्ति, नित्य में तिमिरापह, गंगामार्ग में हरिद्वार, भप्रदीपन में आदित्य, सरस्वती तट पर हंस, पृथूटक में विश्वामित्र, उज्जयिनी में नरद्वीप, सिद्धपुरी में अमलद्युति, कुन्तीकुमार में सूर्य, पञ्चनदी में विमासवसु, मथुरा में विमलादित्य, संज्ञिक में संज्ञादित्य, श्रीकुण्ड में मार्तण्ड, दशार्ण में दण्डक, गोधन में गोपति, मरूस्थल में कर्णदेव, देवपुर में पुष्य, लोहित में केशवादित्य, वैदिश में शार्दूल, शोण में अरूणवासी, वर्द्धमान में साम्बादित्य, कामरूप में शुभङकर, कान्यकुब्ज में मिहिर, पुण्यर्धन में मन्दार, गान्धार में क्षोमणादित्य, लंका में अमरद्युति, चम्पा में कर्णादित्य, प्रबोध में शुमदर्शी, द्वारावती में पावत्य, हिमवन्त में हिमापह, लौहित्य में महातेज, अमलाङ में धूर्जटि, रोहिक में कार, पद्म में पद्मसम्भव, लाटा में धर्मादित्य, अर्बुद में स्थवितर, कौवेरी में सुखप्रद, कोशल में गोपति, कोंकण में पद्मदेव, विन्ध्य पर्वत पर तापन, काशमीर में त्वष्टा, यरित्र में रत्नसम्भव, पुष्कर में हेमगर्भ, गभस्तिक में सूर्य, प्रकाशा में मुज्जाल, तीर्थग्राम में प्रभाकर, काम्पिल्य में इल्लकादित्य, धन्यक में धन्यवासी, नर्मदा तट पर अनल तथा सर्वत्र गगनाधिप नाम से प्रसिद्ध सूर्य देव को मैं नमस्कार करता हूँ।

वाराणस्यां लोहिताक्षं गोभिलाक्षे बृहनमुखम् ।
प्रयोगेषु प्रतिष्ठानं वृद्धादित्यं महाद्युतिम ।।
कोट्यक्षे द्वादशादित्यं गङादित्यं चतुर्घटे।
नैमिषै चैव गोलस्थं भद्रंभद्रपुरे स्थितम् ।।
जयायां विजयादित्यं प्रभासे स्वर्णवेतसम्।
कुरूक्षेत्रे च सामंतं त्रिमन्त्रं च इलावृते।।
महेन्द्रे क्रमणादित्यं हिण्ये सिद्धेश्वरं बिदुः।
कौशाम्ब्यां पद्मबोधं च ब्रह्मबाहौ दिवाकरम्।
केदारे चण्डकीर्ति च नित्ये च तिमिरापहम्।
गङामार्गे विशवद्वारमादित्यं भूप्रदीपने।।
हंस सरस्वतीतीरे विश्वामित्रं पृथूदके।
उज्जयिन्यां नरद्वीपं विद्वायाममलद्युर्तिम्।।
सूर्य कुन्तीकुमारे च पञ्चनद्यां विमवसुम्।
मथुरायां विमलादित्यं संज्ञादित्यं तु संज्ञिके।।
श्रीकुण्डे चैव मार्तण्ड दशार्णे दण्डकंस्मृतम्।
गोधने गोपपिंदेवं कर्ण चैव मरूस्थले।।
पुष्यं देवपु रे चैव के शैवार्क तु लोहिते।
वैदिशे चैव शार्दूलं शोणे वारूणवासिनम्।।
वर्धमाने च साम्बाख्यं कामरूपे शुभंकरम्।
मिहिरं कान्यकुब्जे च मंदारं पुण्यवर्धने।।
गान्धारे क्षोभणादित्यं लंकायाममरद्यतिम्।
कार्णादित्यं च चम्पायां प्र बोधे शुभदर्शिनम्।।
द्वारावत्यां तु पार्वत्यं हिमवन्ते हिमापहम्।
महातेजं तु लोहित्ये अमलांगे च धूर्जटिम्।
रोहिके तु कुमाराख्यं पद्मायां पद्मसम्भवम्।
धर्मादित्यं तु लाटायां अर्बुदे स्थविरं विदुः।
सुखप्रद तु कौ वेर्यां कोसले गोपितं तथा।
कोंगणे तु पद्मदेवं तापनं विंध्यपर्वते।।
त्वष्टारं चैव कश्मीरे चरित्रे रत्नसम्भवम्।
पुष्करे हेमगर्भस्थं विद्यात् सूर्यं गभस्तिके।।
प्रकाशायां तु मुज्जालं तीर्थग्रामे प्रभाकरम्।
कांपिल्ये इल्लकादित्यं धन्यके धन्यवासिनम्।।
अनंतं नर्मदातीरे सर्वत्र गगनाधिपम्।
अष्टषष्टि तु देवस्य भास्करस्यामितद्युते।।

(स्क.पु .प्रभास 139 |13–29)

इस स्तोत्र के पाठ से समस्त कामनायें सिद्ध होती हैं । जो प्राणी प्रातःकाल उठकर इसका पाठ या श्रवण करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। शुद्ध चित्त वाले चित्र के इस प्रकार स्तुति करने पर भगवान् सूर्य ने प्रसन्न होकर कहा कि वत्स! तुम्हारा भला हो । कोई वर माँगो। चित्रगुप्त ने कहा कि "हे उष्णरश्मे! सूर्यदेव!! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे वर दीजिये कि सब कार्यों में मेरी रूचि हो तथा मुझे समस्त कार्यों में निपुणता प्राप्त हो, उनमें मेरा ज्ञान सम्बर्धन हो । चित्र ने कहा।

प्रौढत्वं सर्वकार्येषु नय मां ज्ञानितं तथा।

(स्कन्द पु. प्रभास 138 |35)

शंकर ने पार्वती से चित्र का यह आख्यान कहा। धर्मराज (यम) को जब यह बात विदित हुई, तब उन्होंने सोचा कि यदि चित्र मेरी पुरी में लेखक हो जाते तो बड़ा अच्छा होता। एक समय अग्नितीर्थ में चित्र क्षारसमुद्र में स्नान करने गये । उसमें प्रवेश करते ही यमदूत उन्हें सशरीर यमपुरी ले गये । वहाँ वे चित्रगुप्त नाम से प्रसिद्ध हुए। चित्रगुप्त सम्पूर्ण विश्व के शुभ–अशुभ, चिरत्र पुण्य और पाप लिखते रहते हैं।

CS

तं ज्ञात्वा धर्मराजस्तु बुद्धा परमया युतम्।
चिंतायामास मेधावी लेखकोऽयं भवेद्यदि।।
ततो मे सर्वसिद्धिः स्यान्निर्वृतिश्च परा भवेत्।
एवं चिंतयतस्तस्य धर्मराजस्य भामिनि।।
अग्नितीर्थे गते चित्रे स्नानार्थ लवणाम्भसि।।
स तत्र प्रविशन्नेव नीतस्तु यमकिंकरैः।।
सशरीरो महादेवि यमादेशपराणः।
स चित्रगुप्तनामाऽभू द्विश्वचारित्रलेखकः।।
(स्क.पु .प्रभास खण्ड 139 |37–40)

उपयुक्त विवरण से यह बात स्पष्ट है कि श्री चित्रगुप्त ने सूर्यदेव की उपासना की थी तथा उनके द्वारा स्थापित भगवान् सूर्यदेव का नाम चित्रादित्य हुआ।

चित्रादित्येतिनामाभूत्ततो लोके वरानने।
(चित्रादित्येतिनामभूत्ततो लोके वरानने)
(स्क.पु .प्रभास 139 |41)

भविष्य पुराण में श्री चित्रगुप्त का स्वरूप चिन्तन

भविष्यपुराण में परमात्मा चित्रगुप्त की प्रभुता भगवता और उनके लीलाचरित का महत्वांकन दर्शनीय है। लोकपितामह ब्रह्मा समस्त जगत् के स्रष्टा के शरीर से उनकी अभिव्यक्ति निरूपित की गयी है जिसका आशय यह है कि ब्रह्मा के चित्त के प्रकाश रूप में रमण करने वाले अन्तर्यामी प्रभु हैं, कायस्थ हैं, परब्रह्म चित्रगुप्त हैं।

वे ब्रह्मा की तपस्या से प्रसन्न होकर उनके सामने साक्षात् दिव्य रूप में प्रकट हो गये और सृष्टि के संशोधन–पुण्यकर्म के विस्तार का भार स्वीकार कर उन्होंने ब्रह्मा को अभय प्रदान किया । उन्हें "श्रियासह समुत्पन्न" लक्षणों से युक्त और "समुद्र मथनोद्भव" – समुद्र मंथन काल में नारायणरूप में उद्भुत प्रकट परमात्मा विशेषण से परम तपस्वी भीष्म पिता ने सम्बोधित कर वरदान की याचना की थी। भविष्य पुराण में भीष्म के शब्द निरूपित हैं–

उत्पत्तौ प्रलये चैव त्यागे दाने कृताकृते।
लेखकस्त्वं सदाश्रीमान् चित्रगुप्त नमोऽस्तुते।।
श्रियासह समुत्पन्न समुद्रमथनोद्भव।
चित्रगुप्त महाबाहो ममाद्य वरदो भव।।

भविष्यपुराण में विवरण है कि भीष्मपिताह ने महर्षि पुलस्त्य से श्रीचित्रगुप्त की उत्पत्ति पूछी। पुलस्त्य ने कहा कि ब्रह्मा सृष्टि करने के बाद जगत् के संरक्षण का उत्तरदायित्व कश्यप को सौंपकर तपस्या में तत्पर हो गये । उन्होंने ग्यारह हजार वर्ष तक तप किया। वे समाधि में स्थित हो गये । समाधि समाप्त होने पर ब्रह्मा ने अपने सामने एक श्याम वर्ण के दिव्य पुरूष को स्थित देखा, जो उनके शरीर से प्रकट हुए थे । वे साक्षत् अन्तस्थ परमात्मा थे।

तच्छरीरान्महाबाहु : श्यामः कमललोचनः।
कम्बुग्रीवो गूढशिराः पूर्णचन्द्रनिमाननः।
ले खनीच्छेदनीहस्तो मसीभांजनसं युतः।
निःसृत्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तमः सुविचित्राङ्ग ध्यानास्तिमितलोचनः।।

ब्रह्मा अपने सामने अन्तर्यामी परमात्मा का उपर्युक्त रूप में दर्शन कर धन्य हो उठे । उनके आश्चर्य की सीमा न रही । उन्होंने भगवान चित्रगुप्त का रूप देखा, वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठे । उन्होंने विनम्रतापूर्वक बड़ी उत्सुकता से पूछा कि आप कौन हैं, इस तरह मेरे सामने प्रकट होने की आपने जो महती कृपा की, उससे मैं कृतार्थ हो उठा । मैं आपका स्वरूप नहीं समझ सकता । मुझे अपनी महिमा का बोध प्रदान कीजिए । पुलस्त्य ने भीष्म से कहा कि ब्रह्मा ने समाधि का त्याग कर चित्रगुप्त से पूछा।

त्यक्त्वा समाधिं गाङेय तं ददर्श पितामहः।
अधोर्ध्वस्तन्निरीक्ष्याथ पुरूषञ्चाग्रतः स्थितम्।।
पृप्रच्छ को भवानग्रे तिष्ठते पुरूषोत्तम।

ब्रह्मा भगवान् चित्रगुप्त के रूप का रसास्वादन करने लगे । दिव्य पुरूष ने ब्रह्मा से कहा कि तुमने समाधि में ध्यानस्थ होकर मेरा चिन्तन किया । मैं प्रकट हो गया, तुम मेरा नाम बताओ और मेरा वर्ण निरूपित करो तथा स्पष्ट कहो कि तुमने किस कार्य के लिए मेरा स्मरण किया। ब्रह्मा ने निवेदन किया कि मेरे शरीर से प्रकट होने के नाते आत्मारूप में अभिव्यक्त आप अन्तरात्मा कायस्थ नाम से प्रसिद्ध होंगे । लोक में चित्रगुप्त के नाम से आप प्रसिद्ध होंगे । आप धर्मराज की पुरी में धर्माधर्म का विवेचन करोगे, आप क्षत्रिय वर्ण धर्म का पालन करेंगे।

मच्छरीरात्समुद् भूतस्तस्मात्कायस्तसंज्ञकः।
चित्रगुप्तेति नाम्ना वै ख्यातो भुवि भविष्यसि।।
धर्माधर्मविवेकार्थ धर्मराजपुरे सदा।
स्थितिर्भवतु ते वत्स ममाज्ञां प्राप्य निश्चलाम् ।
क्षत्रवर्णोचितो धर्मः पालनीयो यथाविधि ।।

उपर्युक्त भविष्यपुराणगत अंश मुद्रित भविष्य पुराण में नहीं मिलता है । मुद्रित भविष्य पुराण में चित्रगुप्त आदि के द्वारा

CS Scanned with CamScanner

धर्मराज के निकट शुभाशुभ कर्म के विचार पर प्रकाश डाला गया है।

चित्रगुप्तादिभिः सर्वैर्धर्मस्थै : सत्यवादिभिः।
प्रोक्तं वै धर्मराजस्य निकटे यच्छुभाशुभम्।।
अवश्यं हि कृतं कर्म भोक्तव्यं तद्विचारितम्।।
(भविष्य पुराण ब्राह्मपर्व 192।3)

चित्रगुप्त की शक्ति इरावती-नन्दिनी, उनकी सन्तान

यद्यपि भगवान् चित्रगुप्त परब्रह्म परमात्मा हैं, स्वयं भगवान हैं तथापि उन्होंने लोक व्यवहार में चारित्रिक आदर्श की स्थापना के प्रतीकरूप में पारिवारिक जीवन स्वीकार कर देवकन्यादक्षिणा (नन्दिनी) और धर्मशर्मा की कन्या इरावती का पाणिग्रहण किया। भविष्यपुराण के "अहल्या कामधेनु" खण्ड के नौवें "वत्सोद्धत" अंश में उल्लेख है कि धर्मशर्मा ने अपनी पुत्री इरावती का भगवान चित्रगुप्त से विवाह कर दिया। पद्मपुराण में इस वैवाहिक प्रसंग के सन्दर्भ में ऐसा उल्लेख है कि जब चित्रगुप्त देवरूप में पूजित थे तब धर्मशर्मा ने उनसे अपनी पुत्री का विवाह किया था। यह उल्लेख हस्तलिखित पद्मपुराण में उपलब्ध कहा जाता है। भविष्य पुराण में उल्लेख है –

एतस्मिन्नेव काले तु धर्मशर्मा द्विजोत्तमः।
अपत्यार्थी च धातारमाराध्यम भजत्तदा।।
परमेष्ठिप्र सादेन लब्धवा कन्यामिरावतीम्।
चित्रगुप्त च तां दत्वा विवाहमकरोत्तदा।।

चित्रगुप्त के इरावती या ऐरावती या शोभावती से आठ पुत्र पैदा हुए जो क्रमशः चारू, सुचारू, चित्राक्ष, मतिमान, हिमवान, चित्रचारू, अरूण और अतीन्द्रिय नाम से विख्यात हैं। चित्रगुप्त की दूसरी पत्नी नन्दिनी अथवा दक्षिणा या सुदक्षिणा थी। उनसे चार पुत्र पैदा हुए जो भानु, विभानु, विश्वभानु और वीर्यवान् के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस तरह चित्रगुप्त के बारह पुत्र कहे जाते हैं। उल्लेख मिलता है –

द्वितीया देवकन्येव दक्षिणा या विवाहिता।
तस्याः पुत्राश्च चतवारस्तेषां नामानि वै शृणु।।
भानुस्तथा विभानुश्च विश्वभानुश्च वीर्य वान्।
पुत्रा द्वादश विख्याता विचेरूस्ते महीतीले।।

चित्राख्य को चित्राक्ष भी कहा जाता है। वीर्यवान् को वीर्यभानु भी कहा जाता है। भगवान् चित्रगुप्त ने पुत्रों को सर्वधर्म पालन और कर्तव्यनिष्ठा की सीख दी। लेखनी और शस्त्र दोनों के सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने पुत्रों को देवपूजन, पितृतर्पण तथा अतिथि सेवन का स्वर्ग प्राप्ति के लिए सदुपदेश दिया। वैष्णव धर्म सदाचार को जीवन में उतारने का आदेश दिया।

देवी भागवत पुराण में चित्रगुप्त का सन्दर्भ

मणिद्वीप का दक्षिण दिशा में यमपुरी को स्थिति बतायी गयी। चित्रगुप्त आदि मन्त्रियों के साथ अपने अनुचरों से घिरे हुए यमराज हाथ में विशाल दण्ड लेकर वहाँ विराजते हैं। सूर्यतनय यमराज अपनी शक्ति सहधार्मिणी के साथ वहाँ निवास करते हैं।

याम्याशायां यमपुरी तत्र दण्डधरो महान्।
स्वभटैर्वेष्टितो राजन् चित्रगुप्तपुरोगमैः।
निजीशक्तियुतो भास्वत्तन्योऽस्ति यमो महान्।।
(देवी भागवत 12।10।82–83)

मत्स्य पुराण में श्री चित्रगुप्त

मत्स्यपुराण में श्रीचित्रगुप्तजी को नौ ग्रहों के अधिदेवताओं में से एक प्रतिष्ठित किया गया है। सूर्य के अधिदेवता शिव, चन्द्रमा के अधिदेवता पार्वतीजी, मंगल के अधिदेवता स्कन्द, बुध के अधिदेवता भगवान् विष्णु, बृहस्पति के अधिदेवता ब्रह्मा, शुक्र के अधिदेवता इन्द्र, शनैश्चर के अधिदेवता यम, राहु के अधिदेवता काल और केतु के अधिदेवता चित्रगुप्त माने गये हैं।

भास्करस्येश्वरं विद्यादुमां च शशिनस्तथा।
स्कन्दमङ्गारकस्यापि बुधस्य च तथा हरिम्।।
ब्रह्माणं च गुरोर्विद्याच्छुक्रस्यापि शचीपतिम्।
शनैश्चरस्य तु यमं राहोः कालं तथैव च।।
के तोर्वै चित्रगुप्तं च सर्वेषामधिदेवताः।
(मत्स्यपुराण 93।13–15)

चित्रगुप्त केतु के अधिदेवता के रूप में ब्रह्मा, विष्णु और शिव के समस्थानीय भगवान् हैं।

गरूड़ पुराण में चित्रगुप्त का निरूपण

गरूड़ पुराण में भगवान चित्रगुप्त और उनके कार्य आदि का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। इस वर्णन में उनकी सर्वतंत्र स्वतंत्र प्रभुसत्ता और चित्रगुप्तपुर अथवा चित्रगुप्तलोक के नाम से उनके आधिपत्यक्षेत्र का विवरण दिया गया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि वे स्वतंत्र लोक में निवास कर यम का संयमन करते हैं, यम के कार्यकलाप पर निरन्तर अपनी न्याय दृष्टि रखकर प्राणिमात्र की सदगति का प्रयत्न करते हैं। उसी चित्रगुप्तलोक में न्याय के आसन पर विराजमान भगवान चित्रगुप्त

Scanned with CamScanner

की अधीनता में कायस्थगण पाप–पुण्य का विचार करते हैं। गरूड़ पुराण के उत्तर खण्ड धर्म काण्ड में श्रीकृष्ण की गरूड़ से स्वीकृति है।

एकीभूत यदा सर्वं जगत्स्थावरजङमम्।
क्षीरोदसागरे पूर्वं मयि सुप्ते जगत्पती।।
नाभिस्थोजस्तपस्तेपे पर्वाणि सुबहू न्यपि।
एकीभूतं जगत्सृष्टं भूतग्रामचतुर्विधम्।।
ब्रह्मणा निर्मित पूर्वं विष्णुना पालितं तदा।
रूद्रः संहारमूर्तिश्च निर्मितो ब्रह्मणा ततः।।
वायुः सर्वागतः सृष्टश्च सूर्यस्तेजोभिवृद्धिमान्।
धर्मराजस्ततः सृष्टश्चित्रगुप्तेन संयुतः।।

(गरूड़ पुराण उत्त.धर्म .17 ।5–8)

स्थावर जङम समस्त जगत् के एकीभूत होने पर मेरे (कृष्ण के) क्षीर सागर में सो जाने पर मेरे नाभिकमल से उत्पन्न ब्रह्मा ने बहुत वर्षों तक तप किया। ब्रह्मा ने एकीभूत जगत् तथा प्राणियों का सृजन किया और विष्णु ने पालन किया। ब्रह्मा ने संहारमूर्ति रूद्र, वायु, सूर्य और चित्रगुप्त सहित धर्मराज की सृष्टि की अभिव्यक्ति की। जीव यमपुरी में पिण्डज देह प्राप्त कर अपने कर्म के फल का चित्रगुप्त के वाक्य के अनुसार भोग करता है।

क्वचित्! विलम्बतो देहं पिण्डजं स समाप्नुयात्।
अथो गतो याम्यलोकं स्वीयकर्मानुसारतः।।
चित्रगुप्तस्य वाक्येन निरयाणि भुनक्ति सः।

(गरूड़ पुराण उत्तर.धर्म . 18 ।87–88)

गरूड़ पुराण में यमलोक और चित्रगुप्त की पुरी का वर्णन है कि मनुष्यलोक से यमलोक छियासी हजार योजन दूर है। यमपुरी में यम दूतों से घिरे बैठे रहते हैं। यम का भवन हजार योजन विस्तृत है, यह सूर्य के तेज सा तथा विद्युत के समान प्रकाशित दीख पड़ता है। यह भवन समस्त रत्नों से मण्डित है, पाँच सौ योजन ऊँचा है। यह भवन वैदूर्यमणि मण्डित सहस्रों गोल आकार वाले स्तम्भों से परिवेष्टित हैं। उसके झरोखे मुक्ता जाल से मण्डित हैं। सौ द्वारों पर घंटाध्वनि होती रहती है। दस योजन के विस्तार वाले नीलाम्बरसन्निभ आसन पर भगवान धर्मराज विराजमान रहते हैं। वे धर्म के नियंता हैं, पापियों को प्रताड़ित करते हैं, धर्म करने वालों को सुख प्रदान करते हैं। उनकी चारों ओर वेणु ध्वनि होती है, शंख बजता है। श्रीकृष्ण की गरूड़ से उक्ति है कि यमपुरी के बीच में श्री चित्रगुप्त का भवन है। यह पच्चीस योजन के विस्तार में है। यह दस योजन ऊँचे लोके के प्राचीर से घिरा है। इसमें सैकड़ों पताकायें फहराती रहती हैं। सैकड़ों दीप जलते रहते हैं, गीत–ध्वनि निरन्तर होती रहती है। चित्रगुप्त का भवन अनेक चित्रों से समलंकृत है। मणिमुक्ता के दिव्य आसन पर बैठकर श्री चित्रगुप्त मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों की आयु की गणना करते रहते हैं। अठारह प्रकार के दोषों से रहित मनुष्य की सुकृति का परिणाम वे लिखा करते हैं। वे निष्पक्ष दृष्टि से अपना कार्य सम्पादन करते हैं, वे किसी की सुकृति या दुष्कृति में भ्रमित नहीं होते हैं, जिस प्रकार का कर्म प्राणी करता है, वे उसे ठीक–ठीक यथार्थ रूप में जानते हैं।

पुरमध्यप्रवेशे तु चित्रगुप्तस्य वै गृहम्।
पचविंशतिसंख्यानां योजनानां सुविस्तरम्।
दशोच्छ्रित महादिव्यं लोहप्रा कारवेष्टितम्।
प्र तोलीशतसं चारं पताकाशतशो भितम्।।
दीपिकाशतसं कीर्णं गीतध्वनिसमाकुलम्।
विचित्रचित्रकुशलैश्चित्रगुप्तस्य वै गृहम ।।
मणिकुक्तामयेदिव्ये आसने परमाद्भते।
तत्रस्थो गणयत्यायुर्मानुषेष्वितरेषु च।।
न मुह्यति मदाचित् स सुकृते दुष्कृतेऽपि वा।
यद् येनोपार्जितंयावद् , वै वेत्ति तस्यतत्।
वशाष्टदोषरहितं कृतकर्म लिखत्यसौ।।

(गरूड़ पुराण उत्तर धर्म काण्ड 33 ।24–29)

गरूड़ पुराण में भगवान् चित्रगुप्त निष्पक्ष निर्विकार कर्मफल निर्देशक के रूप में चित्रित हैं।

नारद पुराण में चित्रगुप्त आख्यान

नारद पुराण के उत्तर भाग के तीसरे अध्याय में वैष्णव राजा रूक्मांगद का प्रसंग में चित्रगुप्त का मार्मिक वर्णन मिलता है। रूक्मांगद प्राचीन काल में सार्वभौम राजा थे। वे भगवान विष्णु के भक्त थे। वे नियम से एकादशी व्रत करते थे। उनके राज्य में प्रजा ने एकादशी व्रत का आचरण किया। असंख्य लोगों ने व्रत के प्रभाव से विष्णु लोक वैकुण्ठ प्राप्त किया। यमराज को बड़ी चिन्ता हुई। श्री चित्रगुप्त को लिखने के कार्य से छुट्टी मिल गई थी। लोगों के पूर्व कर्मों के सारे लेख मिटा दिये गये। एक दिन देवर्षि नारद ने धर्मराज के पास जाकर कहा कि आज कल लोगों के पाप कर्मों का लेखन नहीं किया जा रहा है तथा चित्रगुप्त जी मुनि की तरह क्यों मौन साधकर बैठे हैं।

चित्रगुप्तो मुनिरिव स्थितोऽयं मौनसंयुतः।।

(नारदपुराण उ.भाग 3 ।25)

यम ने नारद से रूक्मांगद का वृतान्त कहा और

लोकपालक को छोड़ देने की इच्छा व्यक्त की। यम ने अपनी बात कहने के लिए ब्रह्मा के लोक में जाने का अपना संकल्प प्रकट किया। यमराज नारद और चित्रगुप्त के साथ ब्रह्मा के धाम में गये।

एवमुक्ता यमो च विप्रा नारदेन समन्वितः।
ययौ विरंचिसदनं चित्रगुप्तेन चान्वितः।।

(नारदपुराण उ.3।38–39)

ब्रह्मा की सभा में बैठे हुए लोग देवर्षि नारद तथा कायस्थ (चित्रगुप्त) के साथ यमराज को वहाँ उपस्थित देखकर आश्चर्य से कहने लगे कि ये लेखक (चित्रगुप्त) महोदय बड़े दैत्य के साथ यहाँ उपस्थित हुए हैं। इनके हाथ में जो पट है, जिस पर जीवों का शुभाशुभ कर्म लिखा जाता है, उसका सब लेख मिटा दिया गया है। अब तक किसी भी धर्मात्मा ने इनके पट पर लिखे लेख को नहीं मिटाया था। अब तक तो बात देखने और सुनने में नहीं आयी थी, वह यहीं प्रत्यक्ष दीख पड़ती है। धर्मराज ने ब्रह्मा जी से अपनी स्थिति बतायी। वे निश्चेष्ट हो गये। उदार चित्त वाले लोकमूर्ति वायुदेव ने अपनी सुन्दर और मोटी भुजाओं से यमराज के संदेह का निवारण करते हुए उन्हें और चित्रगुप्त को आसन पर बिठाया। श्री चित्रगुप्त की अवस्था का निरूपण है।

लेखकः समनुप्राप्तो दैन्येन महतान्वितः।
न केनचित्पटोह्यस्य मार्जिताऽभूच्च धर्मिणा।
यन्नदृष्टं श्रुतंवापि तदिहैव प्रदृश्यते।।

(नारद पुराण उ.3।54–55)

चित्रगुप्त का न्याय और शिक्षा

चित्रगुप्त न्यायब्रह्म हैं, पुण्य और पाप के निष्पक्ष विचारक ही नहीं, फल निश्चित करने वाले सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं, वे सनातन (भागवत) धर्म के स्वरूप हैं। अपने उपदेशामृत से वे भवताप के शमन की प्रेरणा प्राणिमात्र को प्रदान करते हैं।

महाभारत में चित्रगुप्त का धर्मोपदेश

महाभारत के अनुशासन पर्व के 130 वें अध्याय में उनके सदुपदेश का विवरण मिलता है। यमराज ने चित्रगुप्त के मत पर प्रकाश डाल कर उनके सदुपदेश का अपने विचार के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता व्यक्त की है।

श्रूयतां चित्रगुप्तस्य भाषितं मम च प्रियम्।

Scanned with CamScanner

(महाभारत अनुशासन 130।14)

यमराज ने कहा कि चित्रगुप्त के शुभ मत धर्म का प्रवचन करता हूँ – किञ्चिद् धर्मं प्रवक्ष्यामि चित्रगुप्तमतं शुभम्।

(महाभारत अनुशासन 130।18)

चित्रगुप्त ने प्राणियों के कल्याण के लिए सत्कर्म की व्यवस्था की। उनका अभिमत है –

पानीयं चैव दीपं च दातव्यं सततं तथा।।
उपानहौ च छत्रं च कपिला च यथातथम्।
पुष्करे कपिला देया ब्राह्मणे वेदपारगे।।
अग्निहोत्रं च यत्नेन सर्वशः प्रतिपालयेत्।
अयं चैवापरो धर्मश्चित्रगुप्तेन भाषितः।।
फलमस्य पृथक्त्वेन श्रोतुमर्हन्ति सत्तमाः।
प्रलय सर्वम् तैस्तु गन्तव्यं कालपर्ययात्।।
तत्र दुर्गमनु प्राप्ताः क्षत् ष्णापरिपीड़ि ता।
दह्यमाना विपच्यन्ते न तत्रास्ति पलायनम्।।

जता, छत्र तथा कपिला गौ का भी यथोचित रीति से दान करना चाहिए। पुष्कर तीर्थ में वेदों के पारंगत विद्वान ब्राह्मण को कपिला गाय देने चाहिए। अग्निहोत्र के नियम का सब तरह से प्रयत्नपूर्वक पालन करना चाहिए। यम का कथन है कि इसके सिवा चित्रगुप्त ने एक दूसरा धर्म भी बताया है। उसके पृथक–पृथक फल का वर्णन साधु पुरुषों को सुनना चाहिए। समस्त प्राणी कालक्रम से प्रलय को प्राप्त होते हैं। पापी के कारण दुर्गम नरक में पड़े प्राणी भूख प्यास से पीड़ित हो आग में जलते हुए तापित किये जाते हैं। उस यातना से निकल भागने का कोई उपाय नहीं है।

अन्धकारं तमो घोरं प्रविशन्त्यल्पबुद्धयः।
तत्र धर्मं प्रवक्ष्यामि येन दुर्गाणि सन्तरेतु।।

मन्दबुद्धि मनुष्य ही नरक के घोर दुःखमय अन्धकार में प्रवेश करते हैं। उस अवसर के लिए मैं धर्म का उपदेश करता हूँ जिसके मनुष्य दुर्गम नरक से पान हो सकता है।

अल्पव्ययं महार्थं च प्रे त्य चैव सुखोदयम्।
पानीयस्य गुणा दिव्याः प्रे तलोके विशेषतः।।
तत्र पुण्योदका नाम नदी तेषां विधीयते।
अक्षयं सलिलं तत्र शीतलं ह्यमृतोपमम्।।
स तत्र तोयं पिबति पानीयं यः प्रयच्छति।
प्रदीपस्य प्रदानेन श्रूयतां गुणविस्तरः।

उस धर्म में व्यय बहुत थोड़ा है, लाभ महान् है। उससे मृत्यु के बाद भी उत्तम सुख मिलते हैं। जल के गुण दिव्य हैं। प्रेतलोक में ये गुण विशेष रूप से लक्षित होते हैं। वहाँ पुण्योदका नाम की नदी है, जो यमलोक के निवासियों के लिए विहित है।

उसमें अमृत के समान मधुर, शीतल और अक्षय जल भरा रहता है। जो यहाँ (भूलोक में) जल दान करता है वही परलोक में जाने पर उस नदी का जल पीता है। दीपदान से भी अधिक लाभ का श्रवण करना चाहिए।

तमोऽन्धकारं नियतं दीपदो न प्रपश्यति।
प्रभां चास्य प्रयच्छन्ति सोमभास्करपावकाः।।
देवताश्चनुमन्यन्ते विमलाः सर्वतो दिशः।
द्योतते च यथाऽऽदित्यः प्रेतलोकगतो नरः।।
तस्माद् दीपः प्रदातव्यः पानीयं च विशेषतः।
कपिलां ये प्रयच्छन्ति ब्राह्मणे वेदपारगे।।
पुष्करे च विशेषेण श्रूयतं तस्य यत्फलम्।
गोशतं सवृषं तेन दत्तं भवति शाश्वतम्।।
पापं कर्म च यत् किञ्चद् ब्रह्महत्या समंभवेत्।
शोधयेत कपिलाह्योका प्रदत्तं गोशत यथा।।
तस्मात्त कपिला देया कौमुद्यां ज्येष्ठपुष्करे।
न तेषां विषमं किंचिन्न दुःखं न च कण्टकाः।।
उपानहौ यो दद्यात् पात्रभूते द्विजोत्तमे।
छत्रदाने सुखां छायां लभते परलोकगः।।
न हि दत्तस्य दानस्य नाशेऽस्तीह कदाचन।।

(महाभारत अनुशासन 130|19–34)

दीपदान करने वाला मनुष्य नरक के नियत अंधकार का दर्शन नहीं करता है। उसे चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि प्रकाश देते रहते हैं। देवता भी दीपदान करने वाले का आदर करते हैं। उसके लिए सम्पूर्ण दिशायें निर्मल हो जाती हैं। प्रेतलोक में जाने पर वह मनुष्य सूर्य के समान प्रकाशित होता है। इसलिए विशेष यत्लपूर्वक दीपदान और जल का दान करना चाहिए। विशेषरूप से पुष्कर तीर्थ में जो वेदज्ञ ब्राह्मणों को कपिला गाय का दान देते हैं, उन्हें उस दान का जो फल मिलता है उसे वृषभ सहित सौ गायों के दान का फल मिलता है। ब्रह्म हत्या के समान पाप को भी, कपिला गाय का दान, शुद्ध कर देता है। इस तरह का एक गोदान सौ गोदान के समान है। ज्येष्ठ पुष्कर तीर्थ में कार्तिक की पूर्णिमा को अवश्य कपिला गाय का दान करना चाहिए। जो श्रेष्ठ एवं सुपात्र ब्राह्मण को उपानह पदत्राण देता है, उसके लिए कहीं कोई विषम स्थान नहीं है। उसे कोई दुःख नहीं होता, न कण्टकों का ही भय रहता है। छाता का दान करने से परलोक में सुख देने वाली छाया मिलती है। चित्रगुप्त का उपर्युक्त मत सुनकर भगवान सूर्य के शरीर में रोमाञ्चहो आया। महातेजस्वी सूर्य ने सम्पूर्ण देवताओं और पितरों से कहा कि आप लोगों ने महात्मा चित्रगुप्त का धर्म विषयक गुप्त रहस्य सुन लिया।

चित्रगुप्तमतं श्रुत्वा हृष्टरोमा विभावसु :।
उवाच देवताः सर्वाः पितॄंश्चैव महाद्युतिः।।
श्रुतं हि चित्रगुप्तस्य धर्मगुह्यं महात्मनः।

(महाभारत अनुशासन पर्व 130/34–35)

Scanned with CamScanner